International Journal of Sanskrit Research 2025; 11(1): 46-51

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2025; 11(1): 46-51
© 2025 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 06-12-2024
Accepted: 13-01-2025

पवन कुमार खराड़ी
शोधार्थी संस्कृत विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय, उदयपुर
राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
पवन कुमार खराड़ी
शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय, उदयपुर
राजस्थान, भारत

ऐतरेय ब्राह्मण में उपलब्ध सूक्तियां: एक विश्लेषण

पवन कुमार खराड़ी

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2025.v11.i1a.2547

सारांश
ऋग्वेद संहिता के ऐतरेय ब्राह्मण के रचयिता महिदास ऐतरेय को माना गया है। स्कन्द पुराण के अनुसार महिदास ऐतरेय को हारित ऋषि के कूल में उत्पन्न हुए माण्डूकि ऋषि और उनकी पत्नी इतरा से उत्पन्न हुआ माना जाता है। अतः स्पष्ट रूप से यह भी कहा गया है कि एक साध्वी के अन्दर जो सद्गुण होने चाहिए वह सब के सब इतरा के अन्दर मौजूद थे। सायणाचार्य ने भी ऐतरेय ब्राह्मण भाष्य में महिदास ऐतरेय की माता का नाम इतरा ही बताया है। छान्दोग्योपनिषद् के अनुसार महिदास ऐतरेय ने 116 वर्ष की आयु का भोग किया था इसका उल्लेख इस प्रकार मिलता है .
महिदास ऐतरेय स ह षोडशं वर्षशतम् अजीवत्।
ऐतरेय ब्राह्मण में कुल 40 अध्याय बताये गये हैं। प्रत्येक 5.5 अध्यायों की 1 पञ्चिका है। इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रन्थ में कुल 8 पञ्चिकाएं है। प्रत्येक अध्याय को पुनः खण्डों में विभाजित किया गया है। ऋग्वेदीय ऐतरेय ब्राह्मण में कुल 40 अध्यायए 8 पञ्चिकाएं और 285 काण्डिकाएं उपलब्ध होती है। ऐतरेय ब्राह्मण में जीवन जगत् एवं दर्शन से सम्बद्ध अनेक सूक्तियों का संकलन प्राप्त होता हैं जिन्हें कुछ शीर्षकों के अन्तर्गत निम्नानुसार देखा जा सकता है .

कूट शब्द: शीर्षकों, वर्षशतम्, ब्राह्मण

प्रस्तावना
कहा गया है कि चक्षु से मनुष्य को सत्य का बोध होता है। अतः जो चक्षु इन्द्रिय है वही सब मनुष्यों में सत्य का आश्रय हैं।[1] इसी प्रकार कहा गया है कि मनुष्य के शरीर में अन्य इन्द्रियों से पहले चक्षु उत्पन्न होता है।[2] चक्षु इन्द्रियां विचक्षण है। चक्षु इन्द्रिय से ही मनुष्य विशेष रूप से वास्तविक तत्त्व का बोध करता है।[3] चक्षु को ऋत कहा है। लोक में विवाद कर रहे दो मनुष्यों में जब एक यह कहता है कि मैंने ऐसा अपनी आंखों से देखा है तभी लोग उसका विश्वास करते हैं।[4]

देवताओं के तीन 'मनोता' है- वाक्, गौ और अग्नि इनमें से देवताओं के मन दृढ़ता से ओतप्रोत हैं -
तिस्रो वै देवानां मनोतास्तासु हि तेषां मनांसि ओतानि,(वाग्वै देवानां मनोता तस्यां हि तेषां मनांस्योतानि, गौर्वै देवानां मनोता तस्यां हि तेषां मनांस्योतानि, अग्निर्वै देवानां मनोता तस्मिन् हि तेषां मनांस्योतानि)।[5]

श्रमपरक

ऐतरेय ब्राह्मण में श्रम की महिमा अत्यन्त मनोरम रीति से व्यक्त की गयी है। कहा गया है कि श्रम नहीं करने वाला व्यक्ति समाज से सुशोभित नहीं होता अर्थात् श्रमविहिन आलसी व्यक्ति को श्री (लक्ष्मी) प्राप्त नहीं होती।[6] जो व्यक्ति निठल्ला बैठकर भोजन करता है, वह श्रेष्ठ होकर भी पापी हैं।[7] इन्द्र अर्थात् ईश्वर भी चलने वाले अर्थात् श्रम करने वाले की सहायता करते हैं।[8] जो चलता रहता है अर्थात् श्रम करता रहता है उसकी जंघाएं फलप्रद होती है और सुगन्धित पुष्प के समान सर्वत्र निर्माण की सुगन्ध फैलाते हुए श्रम करने वाला व्यक्ति आदर का पात्र होता है। जो निरन्तर श्रम करते हैं उनका जीवन सतत् विकासशील होता है और आरोग्य आदि फल से युक्त होता है, उसके समस्त पाप श्रम की महिमा से विनष्ट हो जाते हैं[9] इसलिए कहा गया है कि -

आस्ते भग आसीनस्य, ऊर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठत।
शेते निपद्यमानस्य, चराति चरतो भग।।
कलि शयानो भवति, सजिहानस्तु द्वापर।
उतिष्ठैस्त्रेता भवति, कृत संपद्यते चरन्।।
चरन वै मधु विन्दति चरन्' चरन् स्वादुमुदुम्बरम्।
सूर्यस्य पश्यश्रेमाण, यो न तन्द्रयते चरन्।।
चरैवेति ..... चरैवेति।।[10]

राष्ट्र और राजा के विषय में भी कुछ सूक्तियां ऐतरेय ब्राह्मण में प्राप्त होती हैं। जैसें- जहां क्षत्रिय अर्थात् राजा ब्राह्मण अर्थात् विद्वानों के नेतृत्व में रहता है और कर्मज्ञान के प्रकाश में चलता है, वह राष्ट्र समृद्धि की ओर बढ़ता है। तात्पर्य यह है कि राजाओं के सलाहकार विद्वान् और बुद्धिमान होने चाहिए।[11] राष्ट्र ही राजा के लिए वास्तविक धन है।[12] जो राजा विरोधी शत्रुओं से रहित होता है वही समृद्धि प्राप्त करता कर सकता है।[13] यह भी कहा गया है कि सदाचारी विद्वान् ब्राह्मण ही राष्ट्र का संरक्षण होता है।[14] जो बीत चुका है वह सीमित है और जो भव्य है अर्थात् होने वाला है वह असीम है अर्थात् भविष्य की संभावनाएं अनन्त होती हैं।[15] वह राजा पुरी आयु का उपभोग करता है जिसका विद्वान् ब्राह्मण पुरोहित के रूप में राष्ट्र का रक्षक है।[16]

आतिथ्यपरक

ऐतरेय ब्राह्मण में अतिथि सत्कार की महिमा भी सूक्तियों के माध्यम से गाई गयी है। वह कहा गया है कि आतिथ्य ही यज्ञ का मस्तक है।[17] राजा सोम के साथ जो अनुचरण करते हैं, उन सबका भी अतिथि सत्कार किया जाता है अर्थात् केवल प्रमुख व्यक्ति का ही नहीं बल्कि उसके अनुयायियों का भी अतिथि सत्कार करना चाहिए।[18]

कर्मपरक

ऐतरेय ब्राह्मण में कर्म के विषय में कहा गया है कि जिस प्रकार कोई बुद्धिमान् कृषक खेत से खरपतवार इत्यादि दोषों को निकालता रहता है ठीक उसी प्रकार किसी दुर्बुद्धि अमात्य के द्वारा किए गए दुर्गतियुक्त कार्य को कोई दूसरा बुद्धिमान् अमात्य ठीक कर देता है, ठीक वैसे ही यज्ञ में प्रयुक्त होता दुःस्तुत और दुःशस्त पाठ को ठीक कर देता है।[19] सविता देव ही हमें कर्मशील होने की प्रेरणा प्रदान करते हैं।[20] मनुष्य ही कर्म का विस्तारक होता है।[21]

ज्ञानपरक

ज्ञान के विषय में कहा गया है कि जो विद्वान् यजमान षोडशी स्तोत्र में नानदारण्य साम का प्रयोग करता है, उसके शत्रु नष्ट हो जाते हैं और वह शत्रुरहित हो जाता है -

अभ्रातृव्यो भ्रातृव्यहा भवति य एवं विद्वान् नानदं षोडशिसाम कुरुते।[22]

दानपरक

दान के विषय में कहा गया है कि स्वर्ण ही यश देता है -

यशो वै हिरण्यम्।[23]

धर्मपरक

ऐतरेय ब्राह्मण में धर्म विषयक सूक्तियों के अन्तर्गत निम्नांकित सूक्तियों को देखा जा सकता है। जैसें- जो यजमान प्रजा या पशुरूप प्रतिष्ठा से रहित है, वह प्रशंसनीय नहीं होता है।[24] आदायी अर्थात् प्रतिग्रहशीलता, आपायी अर्थात् सोमपान करने का स्वभाव, यजमानों के घरों पर भोजन करने की प्रवृत्ति तथा अपने स्थान को आसानी से छोड़ देना, ये ब्राह्मण के लक्षण हैं।[25] गर्भावस्था में शिशु माता के गर्भ में मुट्ठी बांधकर सोता है और मुट्ठी बांधकर ही बच्चा जन्म लेता है।[26] कहा गया है कि जिस रात्रि को मैं पैदा हुआ हूं और जिस रात्रि को मैं मरूंगा। इन दोनों के बीच जितने भी यज्ञ अनुष्ठान मैंने किये है उनसे तथा स्वर्गलोक से और अपनी सन्तान से वंचित हो जाऊं यदि मैं तुमसे द्रोह करूं।[27] जिस यजमान को यज्ञ पुरुष सोमयाग करने के लिए प्रेरित करता है, यह यजमान वृत्र अर्थात् पापरूप शत्रु का हनन करता है -

वृत्रं वा एष हन्ति यं यज्ञ उपनमति।[28]

परिवार

ऐतरेय ब्राह्मण में परिवार विषयक सूक्तियां निम्नानुसार उपलब्ध होती है। परिवार दादा-दादी, माता-पिता और पुत्र-पुत्री से निर्मित होता है। पुत्री को दैन्य का कारण कहा गया है।[29] परिवार का मूल आधार पत्नी को कहा गया है।[30] पुत्र को ज्योति रूप कहा गया है वह अपने पिता को परम आकाश में अवस्थापित करता है।[31] इस लोक में जो पुत्रहीन है, उसे इस लोक और परलोक का सुख नहीं मिलता यह सुविदित है।[32] कृषि कार्य में पशुओं का महत्त्व आदिकाल से रहा है। इसलिए ऐतरेय ब्राह्मण का कथन है कि गाय और भैंस इत्यादि पशु गृहस्थ जीवन के सहायक एवं निर्वाहक है। विवाहजन्य सुख के साथ पशुधन दृढ़ता से जुड़ा हुआ है।[33] कुल का विस्तार करने के कारण प्रजा सन्तान ही तन्तु है।[34] पुत्र को पुत्र इसलिए कहते हैं क्योंकि वह पुत् नामक नरक से पिता को बचाता है।[35] स्वर्ण ही सौंदर्य है।[36] इसी प्रकार वस्त्र ही घर है और पत्नी ही मित्र है।[37] कहा गया है कि भाई और बहन एक पेट (कोख) से जन्म लेते हैं जबकि भार्या दूसरे पेट से जन्म लेती है फिर भी बहन भार्या की अनुजीविनी होती है -

समानोदर्या स्वसाऽन्योदर्यायै जायाया अनुजीविनी जीवति।[38]

राजनीतिपरक

ऐतरेय ब्राह्मण में राजनीति से सम्बन्धित कतिपय सूक्तियां कहीं प्रत्यक्ष रूप से तो कहीं संकेत रूप में प्राप्त होती है। विश्व देवों ने उत्तर दिशा में इन्द्र के वैराग्य नामक राज्यशासन के लिए इन्द्र का महाभिषेक किया जाता था। अतः उत्तर दिशा में जो कोई भी राजा हिमालय पर्वत के उत्तर भाग में स्थित उत्तर कुरु और उत्तर मद्र नामक क्षेत्रों से है। उनका वैराज्य के लिए अभिषेक विश्व देवों द्वारा निर्दिष्ट विधि से किया जाता है और इस विधि से अभिषिक्त राजा विराट् संज्ञा से अभिहित होते हैं -

(उदीच्यां दिशि इन्द्रं विश्वेदेवा: ... अभ्यषिञ्चन्... वैराज्याय तस्मादेतस्यां) उदीच्यां दिशि ये के च परेण हिमवन्तं जनपदा उत्तरकुरव उत्तरमद्रा इति वैराज्यायैव ते अभिषिच्यन्ते, विराट् इत्येनान् अभिषिक्तान् आचक्षत एतामेव देवानां विहितिमनु।[39] इन्द्र देवता का अभिषेक करने से प्रजापति लोक की प्राप्ति, महान् ऐश्वर्य, अधिपत्य, अपरतन्त्रता तथा इस लोक में चिरकाल तक वास प्राप्त होता है।[40] इन्द्र का महाभिषेक करने से भोग समृद्धि से युक्त शासन प्राप्त होता है। इसी प्रकार दक्षिण दिशा में जो सत्वत्त राजा है, उनकी भोग समृद्धि के लिए रूद्र

नामक देवों के विधान के अनुसार अभिषेक किया जाता है।[41] अथर्ववेद में कई गद्यांशों में राजा, स्वराट् और सम्राट् का उल्लेख किया गया है, जो विभिन्न दिशाओं के राजा हैं और निर्दिष्ट विधि से अभिषिक्त होते हैं -

(ध्रुवायां मध्यमायां प्रतिष्ठायां दिशि (इन्द्रं) साध्याश्च आप्त्याश्च देवा: ...अभ्यषिञ्चन्...राज्याय तस्मात् अस्यां) ध्रुवायां मध्यमायां प्रतिष्ठायां दिशि ये के च कुरुपञ्चालानां राजान: सवश उशीनराणां राज्यायैव तेऽभिषिच्यन्ते, राजा इत्येनान् अभिषिक्तान् आचक्षत एतामेव देवानां विहितिमनु।

प्रतीच्यां दिशि (इन्द्रं) आदित्या देवा: अभ्यषिञ्चन्... स्वाराज्या तस्मादेतस्यां, प्रतीच्यां दिशि ये के च नीच्यानां राजानो येऽपाच्यानां स्वराज्यायैव तेऽभिषिच्यन्ते, स्वराद् इत्येनान् अभिषिक्तान् आचक्षत एतमेव देवानां विहितिमनु।

प्राच्यां दिशि (इन्द्रं) वसवो देवा अभ्यषिञ्चन् साम्राज्याय तस्मादेतस्यां, प्राच्यां ये के च प्राच्यानां राजान: साम्राज्यायैव तऽभिशिच्यन्ते, सम्राट् इत्येनान् अभिषिक्तान् आचक्षत एतामेव देवानां विहितिमनु।[42]

जिन क्षत्रियों का अभिषेक ऐन्द्र महाभिषेक की विधि से होता है, वे सभी युद्धों को जीतते हैं और सभी लोकों को प्राप्त करते हैं। समस्त राजाओं में श्रेष्ठ और उत्कृष्ट पद को प्राप्त करते है।[43] जो व्यक्ति राष्ट्र में प्रपन्न होता है, वही क्षात्रधर्म को प्रपन्न करता है। क्षात्रधर्म ही राष्ट्र है।[44] जो शासक या क्षत्रिय राष्ट्र की रक्षा में प्रमाद करता है और शत्रुओं को प्रश्रय देता है, उसे राजसत्ता से हटा दिया जाता है।[45] जो शासक ज्ञान संपन्न ब्राह्मण के निर्देशन में राज्य संचालन करता है, उसका राज्य समृद्ध और बलशाली होता है।[46] बहुत सी ऋचाओं से अतिशंसन यानि स्तुति करना किसी बड़े जंगल में भटकने के समान दुःख का कारण है।[47] अभिषेक विधि और प्रयोग में निपुण पुरोहित जिस यजमान के लिए यज्ञ करते हैं, उस यजमान को दैवीय और मानुषिक बाण नहीं लगते हैं। ऐसा यजमान धन और आयु प्राप्त करता है।[48] यदि जल का शान्तिवाचन नहीं किया जाए तो वह जल अशान्त होकर अभिषिक्त होने वाले यजमान की शक्ति को नष्ट कर देता है -

नैतस्याभिषिषिचानस्याशान्ता आपो वीर्यं निर्हणन्निति।[49]

समाजपरक

जो यजमान यज्ञ के अन्त में 'इह गाव:' इत्यादि मन्त्रों से गायों, अश्वों और पुरुषों की कामना करता है, वह पुत्र पौत्र आदि प्रजाओं तथा गाय, अश्व आदि पशुओं से समृद्ध हो जाता है।[50] ब्रह्मत्व क्षत्रिय से पूर्ववर्ती है।[51] ब्राह्मण और क्षत्रिय परस्पर आश्रित है।[52] ब्रह्मा यज्ञ का प्रत्यक्ष रूप है।[53] शस्त्र धारण करने में समर्थ व्यक्ति ही पवित्र होता है और यज्ञ करने के योग्य माना जाता है।[54] ऐतरेय ब्राह्मण में यह भी संकेत दिया है कि निषिद्ध आचरण से ब्राह्मण आदि वर्णों में उच्च गुणों का ह्रास हो जाता है। यदि क्षत्रिय जब पाप करता है तो उसकी सन्तति वैश्य वर्ण के समान हो जाती है -

यदा वै क्षत्रियाय पापं भवति, शूदकल्पोऽस्य प्रजायामाजायत, ईश्वरो हास्माद् द्वितियो वा तृतीयो वा शूद्रतामभ्युपैतो: स शूद्रतया जिज्यूषित:।[55]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि ऋग्वेदीय ऐतरेय ब्राह्मण में जीवन के विविध पक्षों से सम्बन्धित सूक्तियां उपलब्ध होती है जिनसे मानव जीवन सुन्दरतर हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. एतद्ध वै मनुष्येषु सत्यं निहितं यच्चक्षु:। ऐतरेय ब्राह्मण 1.6
2. चक्षु: पुरुषस्य प्रथमं संभवतः संभवति। वही 11.2
3. चक्षुरेव विचक्षणं वि ह्येनेन पश्यतीति। वही 1.6
4. चक्षुर्वा ऋतम् (तस्माद् यतरो विवदमानयोराहाहमनुष्ठया चक्षुषाऽदर्शमिति तस्य श्रद्दधति)। वही 10.8
5. वही 6.10

6. नाऽनाश्रान्ताय श्रीरस्ति। वही 33.3
7. पापो नृपद्वरो जन:। वही 33.3
8. इन्द्र इच्चरत:सखा। वही 33.3
9. पुष्पिण्यौ चरतो जङ्घे, भूष्णुरात्मा फलग्रहि:। शेरेऽस्य सर्वे पाम्पान, श्रमेण प्रपथे हता। चरैवेति.. चरैवेति। वही 33.3
10. वही 33.3
11. तद्यत्र वै ब्राह्मण: (ब्राह्मणस्य) क्षत्रं वशमेति तद्राष्ट्रं समृद्धं तद् राष्ट्रं समृद्ध। वीरवद्। वही 37.5
12. राष्ट्राणि वै घनानि। वही 40.3
13. अप्रतीतो जयति सं घनानि। वही 40.3
14. विद्वान् ब्राह्मणो राष्ट्रगोप:। वही 40.4
15. परिमित वै भूतम्, अपरिमितं भव्यम्। वही 16.6
16. सर्वमायुरेति यस्यैव विद्वान् ब्राह्मणो राष्ट्रगोप: पुरोहित:। वही 40.1
17. शिरो वा एतद्यज्ञस्य यदातिथ्यम्। वही 4.8
18. यावन्त: खलु वै राजानमनुयन्ति तेभ्य: सर्वेभ्य आतिथ्यं क्रियते। वही 3.4
19. यथा दुष्कृष्टं दुर्मतीकृतं सुकृष्टं सुमतीकृतं कुर्वन्नियादेवमेवैतद् यज्ञस्य दुष्टुतं दुरूशस्तं सुष्टुतं सुशस्तं कुर्वन्नेति। वही
20. विता वै प्रसवानामीशे। वही 3.5
21. वही 11.11
22. वही 16.2
23. वही 33.6
24. अस्यां वाव स न प्रतितिष्ठति यो न प्रतितिष्ठति। वही 1.1
25. आदायी आपायी आवसायी यथाकामं प्रयाप्य:। (इति ब्राह्मणगुणा:)। वही 35.3
26. मुष्टी वै कृत्वा गर्भोऽन्त: शेते मुष्टी कृत्वा कुमारो जायते। वही 1.3
27. यां च रात्रिमजायेऽहं यां च प्रेतास्मि तदुभयमन्तरेणेष्टापूर्त्तं मे लोकं सुकृतमायु: प्रजां वृञ्जीथा यदि ते द्रुहयेयमिति। वही 39.1
28. वही 1.4
29. कृपणं हि दुहिता। वही 5.2, 1.10
30. जाया गार्हपत्य:। वही 40.1
31. ज्योतिर्ह पुत्रः परमे व्योमन्। वही 33.1
32. नापुत्रस्य लोकोऽस्तीति तत्सर्वे पशवो विदु:। वही 33.1
33. पशवो विवाहा:। वही 33.1
34. प्रजा वै तन्तु: प्रजामेवास्मा एतत्संतनोति। वही 11.11
35. पुन्नामनरकमनेकशततारं, तस्मात् त्राति पुत्रस्तत्पुत्रस्य पुत्रत्वम्। वही 1.3
36. रूपं हिरण्यम्। वही 33.1
37. शरणं ह वास:। सखा ह जाया। वही 33.1
38. वही 13.13
39. वही 38.3
40. ऊर्ध्वायां दिशि (इन्द्रं) मरुतश्च आङ्गिरसश्च देवा: अभ्यषिञ्चन् पारमेष्ठयाय महाराज्याय आधिपत्याय स्वावश्याय आतिष्ठायेति स परमेष्ठी प्राजापत्योश्ऽभवत्। वही 38.3
41. दक्षिणस्यां दिशि; (इन्द्रं) रुद्रा: देवा: अभ्यषिञ्चन् भौज्याय तस्मादेतस्यां दक्षिणस्यां दिषि ये के च सत्वतां राजानो भौज्यायैव तेऽभिषिच्यन्ते। भोजेत्येनान् अभिशिक्तान् आचक्षत एतामेव देवानां विहितिमनु। वही 38.3
42. वही 38.3
43. ऐन्द्रेण महाभिषेकेणाभिषिक्त: क्षत्रिय: सर्वा जीतिर्जयति।
    सर्वांल्लोकान् विन्दति सर्वेषां राज्ञां श्रेष्ठयमतिष्ठां परमतां गच्छति। वही 39.5
44. क्षत्रं वा एष प्रपद्यते, यो राष्ट्रं प्रपद्यते, क्षत्रं हि राष्ट्रम्। वही 34.4
45. क्षत्रं ह वै राष्ट्राच्यवते यो वै परोभवति तममिह्वयति। वही 29.6
46. तद्यत्र वै ब्राह्मण: (ब्राह्मणस्य) क्षत्रं वशमेति तद्राष्ट्रं समृद्धं तद् वीरवद्। वही 37.5
47. दीर्घारण्यानि ह वै भवन्ति, यत्र बह्वीभि: स्तोमोऽतिशस्यते। वही 29.7
48. न ह वा एनं दिव्या न मानुष्य इषव ऋच्छन्त्येति सर्वमायु: सर्वभूमिर्भवति यमनेवंविदो याजयन्ति। वही 37.7

49. वही 37.2
50. बहुर्ह प्रजया पशुभिर्भवति य एतामन्ततरू प्रजातिमाशास्ते गवामश्वानां पुरुषाणाम्। वही 37.7
51. ब्रहम खलु वै क्षत्रात् पूर्वम्। वही 36.1
52. ब्रहम च क्षत्रं च संश्रिते। वही 11.11
53. यज्ञ उ वा एष प्रत्यक्षं यद् ब्रहमा। वही 34.8
54. यदा वै क्षत्रिय: सान्नाहुको भवतिए अथ च मेध्यो भवति। वही 33.2
55. वही 35.3